

डॉ. नट हेम, नीतिवचन, व्याख्यान 6, व्यक्तिगत बुद्धि, भाग 1

© 2024 नॉट हेम और टेड हिल्डेब्रांट

यह नीतिवचन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. नट हेम हैं। यह सत्र संख्या छह, रूपक और वैयक्तिक बुद्धि, भाग एक है। नीतिवचन की बाइबिल पुस्तक पर छठे व्याख्यान में आपका स्वागत है।

इस व्याख्यान में और अगले व्याख्यान, व्याख्यान सात में, मैं उनमें से प्रत्येक में बाइबिल की नीतिवचन पुस्तक के दो पहलुओं को देखूंगा, ये सभी अध्याय एक से नौ तक ज्ञान के मानवीकरण से संबंधित हैं। तो, लेडी विजडम इस तरह कार्य करती है मानो, ज्ञान का संज्ञानात्मक बौद्धिक गुण इस पुस्तक के पत्रों पर ऐसा व्यवहार कर रहा हो जैसे कि वह एक महिला, एक इंसान, एक महिला इंसान हो। लेकिन इसे और अधिक पूरी तरह से जानने के लिए, सबसे पहले, मैं आधुनिक रूपक सिद्धांत की गहन खोज से शुरुआत करूंगा जो हमें ज्ञान के संबंध में मानवीकरण के रूपक को समझने में मदद करेगा।

और हम इसे दो भागों में करेंगे, व्याख्यान छह में रूपक सिद्धांत एक और व्यक्तित्व ज्ञान एक, और फिर व्याख्यान सात में रूपक सिद्धांत दो और व्यक्तित्व ज्ञान दो। एक क्रांति चल रही है, एक इंसान होने के बारे में हमारी समझ में एक क्रांति। मानव मस्तिष्क की प्रकृति से कम कुछ भी दांव पर नहीं है।

तो, रूपक अध्ययन में एक प्रमुख खिलाड़ी, जॉर्ज लैकॉफ़ के शब्द। 20वीं शताब्दी की अंतिम तिमाही तक पश्चिमी विचारों का सारांश देते हुए, लैकॉफ़ आगे कहते हैं, और मैं उद्धृत करता हूँ, सदियों से, पश्चिम में हम खुद को तर्कसंगत जानवर मानते हैं जिनकी मानसिक क्षमताएं हमारी शारीरिक प्रकृति से परे हैं। इस पारंपरिक दृष्टिकोण में, हमारे दिमाग अमूर्त, तार्किक, भावनात्मक रूप से तर्कसंगत, सचेत रूप से सुलभ हैं, और सबसे ऊपर, दुनिया को सीधे फिट करने और उसका प्रतिनिधित्व करने में सक्षम हैं।

मनुष्य क्या है, इस दृष्टि से भाषा का विशेष स्थान है। यह हमारे दिमाग की आंतरिक एक विशेषाधिकार प्राप्त, तार्किक प्रतीक प्रणाली है जो पारदर्शी रूप से अमूर्त अवधारणाओं को व्यक्त करती है जो बाहरी दुनिया के संदर्भ में परिभाषित होती हैं। अंत उद्धरण।

फिर भी, हाल के दशकों में, विश्लेषणात्मक संज्ञानात्मक वैज्ञानिकों और कंप्यूटर वैज्ञानिकों ने अनुभवजन्य साक्ष्य संकलित किए हैं जो दर्शाते हैं कि मन और शरीर अटूट रूप से जुड़े हुए हैं। मैं फिर से लैकॉफ़ से उद्धृत करता हूँ। विचार मस्तिष्क में उन्हीं तंत्रिका संरचनाओं द्वारा संचालित होते हैं जो दृष्टि, क्रिया और भावना को नियंत्रित करते हैं।

भाषा को संवेदी-मोटर और भावनात्मक प्रणाली के माध्यम से सार्थक बनाया जाता है जो लक्ष्यों को परिभाषित करती है और कार्यों की कल्पना करती है, पहचानती है और उन्हें क्रियान्वित

करती है। अब, 21वीं सदी की शुरुआत में, सबूत सामने आ गया है, गेंद का खेल खत्म हो गया है, और मन मूर्त हो गया है। अंत उद्धरण.

निम्नलिखित अनुच्छेद हमारी समझ की समझ में इस प्रतिमान बदलाव के परिणाम का सारांश प्रस्तुत करता है। अवतार क्रांति ने दिखाया है कि हमारी आवश्यक मानवता, हमारी सोचने और भाषा का उपयोग करने की क्षमता, पूरी तरह से हमारे भौतिक शरीर और मस्तिष्क का एक उत्पाद है। हमारा दिमाग जिस तरह से काम करता है, हमारे विचारों की प्रकृति से लेकर जिस तरह से हम अर्थ और भाषा को समझते हैं, वह हमारे शरीर से अटूट रूप से जुड़ा हुआ है।

हम दुनिया को कैसे समझते हैं, महसूस करते हैं और कैसे कार्य करते हैं। हम ठंडे दिमाग से सोचने वाली मशीनें नहीं हैं। हमारा शरीर विज्ञान हमारे दर्शन के लिए अवधारणाएँ प्रदान करता है।

मेरे विचार में, ये ज्ञानमीमांसीय विकास बताते हैं कि आलंकारिक भाषा, विशेष रूप से रूपक, उपमा, रूपक और पर्यायवाची शब्द, मानव विचार और संचार के लिए आवश्यक निर्माण खंड हैं। आलंकारिक भाषा हमें मानसिक रूप से यह बताने का साधन प्रदान करती है कि कैसे हमारे शरीर, हमारे मस्तिष्क के माध्यम से, हमारी इंद्रियाँ हमारे चारों ओर और हमारे भीतर की दुनिया में जो अनुभव करती हैं, उसे संसाधित करती हैं। व्यावहारिक मानव जीवन के लिए इस अवतार क्रांति का परिणाम, लैकॉफ के शब्दों में, जीवन के सभी क्षेत्रों और पहलुओं के लिए प्रासंगिक है।

मैं फिर से उद्धृत करता हूँ, हमारे पास जो भी विचार हैं या हो सकते हैं, हर लक्ष्य जो हम निर्धारित करते हैं, हर निर्णय या निर्णय जो हम लेते हैं, और हर विचार जिसे हम संप्रेषित करते हैं, उसी सन्निहित प्रणाली का उपयोग करते हैं जिसे हम समझने, कार्य करने और महसूस करने के लिए उपयोग करते हैं। इसमें से कोई भी किसी भी तरह से अमूर्त नहीं है। नैतिक व्यवस्था नहीं।

राजनीतिक विचारधारा नहीं। गणित या वैज्ञानिक सिद्धांत नहीं। और भाषा नहीं।

और धर्मशास्त्र नहीं, मैं जोड़ना चाहता हूँ। लैकॉफ ने यह सब अपने ही छात्रों में से एक, बेंजामिन बर्गेन की 2012 की पुस्तक, लाउडर थान वर्ड्स, द न्यू साइंस ऑफ़ हाउ द माइंड मेक्स मीनिंग, की प्रस्तावना में कहा है। उस खंड में, बर्गेन स्पष्ट रूप से लैकॉफ के काम के प्रति अपनी ऋणीता को स्वीकार करते हैं।, और लैकॉफ की प्रस्तावना का कुछ हद तक विजयी स्वर ज्ञानमीमांसीय उथल-पुथल में उनके स्वयं के योगदान के बारे में कम से कम कुछ जागरूकता का सुझाव देता है।

मैं आपको पिछले 35 वर्षों में रूपक के बारे में हमारी सोच के इतिहास का एक संक्षिप्त सारांश देता हूँ। कैम्ब्रिज हैंडबुक ऑफ़ मेटाफ़ोर का पहला संस्करण, मेटाफ़ोर एंड थॉट नामक और एंड्रयू ऑर्टोनी द्वारा संपादित, 1979 में प्रकाशित हुआ था, लैकॉफ और उनके सहयोगी जॉनसन द्वारा रूपक सिद्धांत पर सफल मोनोग्राफ के लिए एक वर्ष पहले। यहां तक कि कैम्ब्रिज हैंडबुक के दूसरे संस्करण में, 14 साल बाद 1993 में, लैकॉफ और जॉनसन के सफल मोनोग्राफ, मेटाफ़र्स वी लिव बाय का केवल संक्षिप्त संदर्भ था।

हालाँकि उस खंड में कम से कम वास्तव में लैकॉफ़ का योगदान था, जो अब क्षेत्र में एक खिलाड़ी के रूप में पहचाना जाने लगा था। यह 2008 तक नहीं था, जब कैंब्रिज हैंडबुक का तीसरा संस्करण, जिसे अब रेमंड गिब्स द्वारा संपादित किया गया था, सामने आया, कि लैकॉफ़ और जॉनसन के काम का पूरा प्रभाव लगभग हर पृष्ठ पर और प्रत्येक योगदानकर्ता के हाथ से वॉल्यूम तक महसूस किया जा सकता था। . लैकॉफ़ और जॉनसन के काम को अब पहचान मिली कि वह क्या था।

उनका खंड, मेटाफ़ोर्स वी लिव बाय तब से 1989 के मोर दैन कूल रीज़न नामक अनुवर्ती मोनोग्राफ़ से जुड़ गया, जिसे लैकॉफ़ ने मैक्स टर्नर के साथ सह-लेखक बनाया, अब रूपक अध्ययन की कला की स्थिति को परिभाषित किया गया है। 1980 तक अरस्तू के रूपक सिद्धांत में अधिकांश महत्वपूर्ण योगदानों को पढ़ने के बाद, मैं 1999 से माइक अब्राम्स की ए ग्लोसरी ऑफ़ लिटरेरी टर्म्स के निम्नलिखित सारांश से सहमत हूँ। यह एक लाभकारी अनुस्मारक है कि जबकि अधिकांश मनुष्य मूल भाषा के सक्षम उपयोगकर्ता हैं और नियमित रूप से और दैनिक जीवन में रूपकों को सक्षम रूप से नियोजित करने के बावजूद, हमारे दार्शनिकों और हमारे व्याख्याकारों और बाइबिल सहित साहित्य के विद्वानों ने हाल तक रूपकों के बारे में बहुत कम समझा है।

अब्राम्स का एक उद्धरण. 25 शताब्दियों तक अलंकारिकों, व्याकरणविदों और साहित्यिक आलोचकों द्वारा रूपक पर ध्यान देने के बाद, जिसमें पिछली आधी शताब्दी के दौरान कई दार्शनिक भी शामिल हो गए हैं, इस बारे में कोई आम सहमति नहीं है कि हम रूपकों की पहचान कैसे करते हैं, हम उन्हें कैसे समझने में सक्षम हैं, और क्या, यदि कुछ भी हो, वे हमें बताने का काम करते हैं। अंत उद्धरण.

रूपक की घटना के साथ बौद्धिक जुड़ाव के इतिहास का यह मूल्यांकन उचित और शिक्षाप्रद है। अब्राम्स का फैसला इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए और भी अधिक गंभीर है कि हम रूपकों को कैसे पहचानें, समझें और कैसे लागू करें, यह सवाल 20 वीं शताब्दी के पहले तीन-चौथाई के रूपक अध्ययनों में जांच का वास्तविक केंद्र था। यहां 1980 से पहले रूपक अध्ययन के मुख्य सिद्धांतों का लैकॉफ़ और जॉनसन का सारांश दिया गया है।

सबसे पहले, रूपक शब्दों का विषय है, विचार का नहीं। रूपक तब घटित होता है जब कोई शब्द उस चीज़ पर लागू नहीं होता है जिसे वह सामान्य रूप से निर्दिष्ट करता है, बल्कि किसी और चीज़ पर लागू होता है। दूसरा, रूपक भाषा सामान्य पारंपरिक भाषा का हिस्सा नहीं है।

इसके बजाय, यह उपन्यास है और आम तौर पर कविता, अनुनय के अलंकारिक प्रयासों और वैज्ञानिक खोज में उत्पन्न होता है। तीसरा, रूपक भाषा पथभ्रष्ट है। रूपकों में शब्दों का प्रयोग उनके उचित अर्थों में नहीं किया जाता है।

चौथा, सामान्य रोजमर्रा की भाषा में पारंपरिक रूपक अभिव्यक्तियाँ तथाकथित मृत रूपक हैं। यानी वे अभिव्यक्तियाँ जो कभी रूपक थीं लेकिन अब शाब्दिक अभिव्यक्तियों में बदल गई हैं। पाँचवाँ, रूपक समानताएँ व्यक्त करते हैं।

अर्थात्, शब्द सामान्य रूप से क्या निर्दिष्ट करते हैं और जब वे रूपक के रूप में उपयोग किए जाते हैं तो वे क्या निर्दिष्ट करते हैं, इसके बीच पहले से मौजूद समानताएँ हैं। अब याद रखें, ये पांच बिंदु वास्तव में रूपक के पुराने विचारों का हिस्सा हैं, न कि वह जो हमने लैकॉफ़ और जॉनसन के काम के बाद से पिछले 35 वर्षों में खोजा है। कई अन्य महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टियों के बीच, जिन्हें इस व्याख्यान में संबोधित करने के लिए मेरे पास समय नहीं है, मैं पारंपरिक रूपक सिद्धांत और रूपक व्याख्याओं में निम्नलिखित तीन त्रुटियों पर प्रकाश डालना चाहता हूँ।

सबसे पहले, तथाकथित उपन्यास या बोल्ड रूपकों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया था। दूसरे, और इसके विपरीत, तथाकथित मृत रूपक बहुत जीवित हैं और वास्तव में मानव विचार और संचार की रीढ़ हैं। तो, रूपक सिद्धांत की नई समझ में, पुराने सिद्धांतों में जिसे खारिज कर दिया गया है, वह संभवतः रूपकों के बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात है।

तीसरा, रिचर्ड्स, प्राथमिक विषय और माध्यमिक या सहायक विषय, काले, कभी-कभी और छवि, पॉल एविस के अनुसार रूपकों का पारंपरिक उपचार किसी तरह टेनर और वाहन से बना होता है, जो वास्तविक रूपक अभिव्यक्ति पर रूपक के पुनर्निर्मित अर्थ को प्राथमिकता देता है। और मेरा मानना है कि यह एक गलती है। अब मैं विशेष रूप से लैकॉफ़ और जॉनसन के काम और उसके प्रभाव की ओर मुड़ता हूँ।

तो फिर आधुनिक रूपक सिद्धांत में लैकॉफ़, जॉनसन और टर्नर के काम का क्या योगदान है? उनके काम में ऐसा क्या खास है? 1980 में अपनी मौलिक पुस्तक, मेटाफ़र्स वी लिव बाय के प्रकाशन के बाद से, जॉर्ज लैकॉफ़ और मार्क जॉनसन ने रूपक सिद्धांत के विकास पर गहरा प्रभाव डाला है। अपनी पुस्तक में, वे निम्नलिखित समस्याग्रस्त पुष्टि करते हैं, जो रूपक के कई अन्य विवरणों से भिन्न नहीं है। और मैं उद्धृत करता हूँ, यह सिर्फ एक पंक्ति है।

रूपक का सार एक चीज़ को समझना और अनुभव करना है... क्षमा करें, मैं फिर से शुरू करता हूँ। रूपक का सार एक प्रकार की चीज़ को दूसरे के संदर्भ में समझना और अनुभव करना है। इतना ही।

यह पहली बार में सरल और गैर-विवादास्पद लग सकता है, लेकिन जिस तरह से वे इसे विकसित करते हैं, उसके रूपक सिद्धांत के लिए बड़े पैमाने पर परिणाम होते हैं। अर्थ के दो क्षेत्र हैं। इनमें से एक हमारे अनुभव के करीब है, जबकि दूसरा वह है जिसे हम रूपक अभिव्यक्ति की मदद से तलाश रहे हैं।

और इसलिए, इस कथन ने रूपक के संज्ञानात्मक पहलुओं पर बढ़ते विद्वतापूर्ण फोकस का उद्घाटन किया। इस परिभाषा में एक और विशेषता जिस पर मैं प्रकाश डालना चाहता हूँ वह है समझने और अनुभव करने पर जोर। यह परिभाषा इस बात पर जोर देती है कि रूपक सजावटी से कहीं अधिक हैं, बल्कि वे समझने में योगदान करते हैं।

और वे ऐसा हमें न केवल जो कहा जा रहा है उस पर विचार करने बल्कि उसका अनुभव करने में मदद करके करते हैं। रूपक का एक बहु-संवेदी संज्ञानात्मक पहलू है। एक और महत्वपूर्ण

हालिया अंतर्दृष्टि पारंपरिक रूपकों और तथाकथित उपन्यास रूपकों के बीच संबंध से संबंधित है।

अच्छे कारण से अधिक के परिणामों पर चित्रण करते हुए, लैकॉफ और टर्नर ने निष्कर्ष निकाला कि अधिकांश, यदि सभी नहीं, तो रूपक इस मायने में वैचारिक हैं कि वे पारंपरिक रूपकों की एक जटिल और उच्च संरचित प्रणाली से संबंधित हैं। और उपन्यास रूपक इस प्रणाली से स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होते हैं। मैं उद्धृत करता हूँ, इस चर्चा से मुख्य बात यह है कि रूपक, अधिकांश भाग में, इस विशाल, उच्च संरचित, निश्चित प्रणाली में रहता है।

एक प्रणाली मृत के अलावा कुछ भी नहीं है। चूँकि यह पारंपरिक है, इसका उपयोग बिना किसी प्रयास या जागरूकता के लगातार और स्वचालित रूप से किया जाता है। उपन्यास रूपक इस प्रणाली का उपयोग करता है और इस पर निर्माण करता है, लेकिन इससे स्वतंत्र रूप से यह शायद ही कभी होता है।

यह सबसे दिलचस्प है कि रूपक की यह प्रणाली अमूर्त तर्क को जन्म देती प्रतीत होती है, जो स्थानिक तर्क पर आधारित प्रतीत होती है। अंत उद्धरण. मेटाफ़ोर एंड थॉट का तीसरा संस्करण 2008 में प्रकाशित हुआ था, जिसका नाम अब द कैम्ब्रिज हैंडबुक ऑफ़ मेटाफ़ोर एंड थॉट है, और इसने रूपक अध्ययन में एक विशाल बदलाव का संकेत दिया।

हम पाठ संख्या सात में इसका पता लगाएंगे क्योंकि मुझे लगता है कि मैंने अब आपके साथ रूपक सिद्धांत के बारे में पर्याप्त सैद्धांतिक विवरण साझा किया है। और मैं इस व्याख्यान के शेष भाग में, व्याख्यान छह में, नीतिवचन की पुस्तक में ज्ञान के मानवीकरण को देखना चाहता हूँ। तो अब व्याख्यान छह के दूसरे भाग में, हम नीतिवचन की पुस्तक में ज्ञान के मानवीकरण को देखने जा रहे हैं।

और एक हद तक, हम इस पर भी गौर करेंगे, कम से कम इस सवाल पर विचार करेंगे कि नाज़रेथ के यीशु को मसीहा के रूप में पहचानने के लिए ज्ञान के अवतार ने किस तरह की भूमिका निभाई होगी या नहीं निभाई होगी, और फिर मसीहा से भी अधिक, नए नियम में परमेश्वर के पुत्र के रूप में। हम उस पर पूरी तरह से चर्चा नहीं करेंगे, क्योंकि यह नीतिवचन की पुस्तक पर एक व्याख्यान श्रृंखला है, नए नियम पर नहीं। लेकिन कम से कम हमें इससे संबंधित कुछ मूलभूत अंतर्निहित व्याख्यात्मक, दार्शनिक और धार्मिक प्रश्नों को सामने लाने की आवश्यकता है।

तो ज्ञान का मानवीकरण, एक इंसान के रूप में ज्ञान का यह रूपक, नीतिवचन की पुस्तक को पढ़ने को कैसे प्रभावित करता है? अगले कुछ मिनटों में, मैं नीतिवचन की पुस्तक में ब्रूस वाल्टके की व्यक्तिगत ज्ञान की समझ का सारांश प्रस्तुत करूँगा। अलग-अलग पाठों का उनका विश्लेषण कुछ हद तक बाद में नीतिवचन में विशेष पाठों के मेरे उपचार के साथ एकीकृत हो गया है क्योंकि उनमें व्यक्तिगत ज्ञान का उल्लेख है। नीतिवचन की पुस्तक पर अपनी बेहतरीन टिप्पणी में ब्रूस वाल्टके के उपचार में मौलिक धारणा यह है कि, उद्धरण, प्रस्तावना में व्यक्त

ज्ञान, जो कि अध्याय 1.8 से 8.36 है, सोलोमन की नीतिवचन है, अर्थात् नीतिवचन 10 से 29, जिसके लिए प्रेरित बातें हैं एगुर और लेमुएल को जोड़ा गया है, अंतिम उद्धरण।

विस्तार से, वाल्टके ने उसके व्यक्तित्व या भेष और उनके पीछे की वास्तविकता के बीच अंतर किया। नीतिवचन 1.20 से 33 और नीतिवचन 8.1 से 36 के प्रमुख अंशों के अलावा, 6.22 में महिला ज्ञान को एक मार्गदर्शक, 7.4 में एक प्यारी बहन या दुल्हन और 9.1 से 6 में एक परिचारिका के रूप में चित्रित किया गया है। वाल्टके ने 1.20 से 33 की प्रकाश में व्याख्या की है। 8.1 से 36 तक क्योंकि केवल उन दो अंशों में ज्ञान शहर के द्वार पर समान भाषा का उपयोग करते हुए विस्तारित भाषण देता है, मैं वाल्टके से उद्धृत करता हूँ। यदि उस संभावित समीकरण को स्वीकार कर लिया जाता है, तो उसे आदिकाल में ईश्वर द्वारा उत्पन्न और उससे बहुत अलग और शाश्वत नहीं, अंतिम उद्धरण के रूप में दर्शाया गया है।

बहरहाल, वाल्टके के तर्क में थोड़ा तनाव दिखता है। उन्होंने विभिन्न प्रकार की महिलाओं के रूप में ज्ञान की अन्य पहचानों को खारिज कर दिया क्योंकि, उद्धरण, इनमें से कोई भी उनकी भविष्यसूचक शिक्षा और दिव्य भूमिकाओं के साथ न्याय नहीं करता है, अंत उद्धरण। वाल्टके ने हालिया विद्वता में मानवकृत ज्ञान की कई और विविध पहचानों की गणना की और निष्कर्ष निकाला कि, उद्धरण, ऋषि एक अद्वितीय महिला के रूप में ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है जो पैगंबर का वस्त्र पहनती है, बुद्धिमान पुरुषों के स्कॉल रखती है, और पहनती है एक देवी जैसा मुकुट, अंत उद्धरण।

और उन्होंने माइकल फॉक्स की टिप्पणी का अनुमोदन किया, जिन्होंने क्लाउडिया कैंप के काम का अनुसरण किया था। मैं फिर से उद्धृत करता हूँ, लेडी विजडम किसी भी ज्ञात वास्तविकता का प्रतिनिधित्व किए बिना सांसारिक और साहित्यिक क्षेत्रों से विभिन्न प्रकार की घटनाओं को इकट्ठा कर सकती है, अंतिम उद्धरण। वाल्टके की समझ में ज्ञान की तीन प्रमुख विशेषताएँ हैं: पहला भविष्यसूचक, दूसरा ज्ञानात्मक और तीसरा दैवीय।

निम्नलिखित विस्तारित उद्धरण नीतिवचन 1 से 9 में व्यक्त ज्ञान के व्यक्तित्व की जटिल प्रस्तुति के बारे में वाल्टके के दृष्टिकोण को सारांशित करता है। मैं उद्धृत करता हूँ, उसके चरित्र-चित्रण के भविष्यसूचक, ज्ञानपूर्ण और दैवीय घटक एक-दूसरे में इतने घुलमिल जाते हैं कि वह एक अद्वितीय व्यक्तित्व के रूप में उभरती है जिसका एकमात्र समकक्ष है यीशु मसीह। एक अवतरित स्वर्गीय प्राणी के रूप में उनकी पहचान, जो अपमान में जनता की अस्वीकृति को स्वीकार करते हुए उन्हें कैनन के भीतर शाश्वत जीवन कार्यों की पेशकश करती है, जो कि सुलैमान से भी बड़ा है। वह एक भविष्यवक्ता के जुनून के साथ उपदेश देती है और प्रार्थना करती है, बुद्धिजीवियों के साथ सोचती है और प्रसारित करती है, और भगवान के अधिकार का उपयोग करती है।

वह मिरियम या ऋषि-जैसे एथन द एस्केटाइट की तरह कोई साधारण भविष्यवक्ता नहीं है। नारी बुद्धि एक अद्वितीय स्वर्गीय मध्यस्थ है जो मानवता के लिए ईश्वर के ज्ञान की मध्यस्थता करती है। हालाँकि वह इंसानों की तुलना में ईश्वर से अधिक निकटता से जुड़ी हुई है, फिर भी वह अनुग्रह के अद्भुत प्रदर्शन में शहर के गेट के उबड़-खाबड़ इलाकों में जनता के साथ कंधे से कंधा मिलाकर

चलती है, जो अनुत्तरदायी युवाओं को शाश्वत मृत्यु से पहले उनकी फटकार पर पश्चाताप करने के लिए आमंत्रित करती है।

अंत उद्धरण. अब मैं यहां ब्रूस वाल्टके जो कर रहा है उसकी काफी आलोचना करने जा रहा हूं, लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि कई व्याख्याओं में मेरे पास काफी अलग-अलग जोर हैं, मैं यह कहना चाहता हूं कि मैं वाल्टके के काम के बारे में उच्च स्तर पर शिकायत कर रहा हूं। संतुष्टि का स्तर. उनके लेखन में बहुत सारी सच्चाई और बहुत सारी बुद्धिमत्ता है।

मुझे लगता है कि वाल्टके की टिप्पणी के साथ-साथ माइकल फॉक्स की टिप्पणी नीतिवचन की पुस्तक पर हमारे पास सौ वर्षों से चली आ रही सर्वश्रेष्ठ टिप्पणियाँ हैं। इसलिए, मैं यह नहीं कह रहा हूं कि वाल्टके जो कुछ भी कह रहे हैं वह गलत है, लेकिन मैं जो करने की कोशिश कर रहा हूं वह रूपक सिद्धांत का उपयोग करना है जैसा कि हमने पहले व्याख्यान में करना शुरू कर दिया है ताकि ज्ञान के मानवीकरण की ओर भी गहरी समझ को बढ़ाया जा सके। मेरा मानना है कि करीब से निरीक्षण करने पर पता चलता है कि वाल्टके की एक अद्वितीय स्वर्गीय मीडियाट्रिक्स के रूप में व्यक्त ज्ञान की पेंटिंग में तीन दरारें हैं।

एक ओर, उन्होंने नॉर्मन व्हाईब्रे के इस विचार को आंशिक रूप से मंजूरी दे दी कि बुद्धि ईश्वर के गुण का हाइपोस्टैज़ीकरण है। वे कहते हैं, वास्तव में, बुद्धि उसके अस्तित्व से ही उत्पन्न होती है। जबकि एड्स 22 के अनुसार, बुद्धि वास्तव में ईश्वर द्वारा उत्पन्न की गई है, जैसा कि हम बाद में पता लगाएंगे, मुझे नीतिवचन की पुस्तक में कोई संकेत नहीं मिला कि उसकी उत्पत्ति ईश्वर के अस्तित्व से हुई थी, जैसा कि वाल्टके के पास होगा।

वॉल्टके के इस तर्क में एक और दरार दिखाई देती है कि एक उद्धरण, प्रस्तावना की समग्र व्याख्या, यानी, नीतिवचन 1.8-8.36, दर्शाता है कि ज्ञान अपने सभी विभिन्न रूपों में, विशेष रूप से एक स्वर्गीय मध्यस्थ के रूप में, सुलैमान के प्रेरित ज्ञान को व्यक्त करता है, अंतिम उद्धरण। वाल्टके की मूल परिकल्पना कि नारी ज्ञान नीतिवचन की पुस्तक में निहित शिक्षा को व्यक्त करता है, ठोस है। हालाँकि, यह विचार कि मानवीकृत ज्ञान एक स्वर्गीय मध्यस्थ है, इस तथ्य के साथ सीधे तनाव में प्रतीत होता है, वाल्टके द्वारा सही ढंग से जोर दिया गया है, कि वह जो मध्यस्थता करती है उसमें नीतिवचन की पुस्तक में निहित सांसारिक शिक्षाएं शामिल हैं।

वाल्टके की अपनी पहचान के अर्थ में, वह एक ही समय में मध्यस्थ और मध्यस्थ सामग्री दोनों हैं। वाल्टके के व्यक्तिगत ज्ञान के प्रतिनिधित्व में तीसरी दरार नीतिवचन की पुस्तक के धर्मशास्त्र की उनकी चर्चा के एक भाग के रूप में प्रकट होती है, जिसमें क्राइस्टोलॉजी की एक महत्वपूर्ण चर्चा शामिल है। उनकी प्रस्तुति दो भागों में बँटती है।

स्त्री ज्ञान का यीशु मसीह से संबंध और स्त्री ज्ञान से यीशु मसीह की श्रेष्ठता। वह इसे दोनों तरीकों से पाना चाहता है। ईसाइयों और धर्मशास्त्रियों ने ज्ञान और यीशु मसीह के बीच के संबंध को कैसे समझा, इसके एक संक्षिप्त सर्वेक्षण में, वाल्टके ने इस बात पर प्रकाश डाला कि जस्टिन शहीद, 125 ई. के बाद से, अधिकांश ईसाइयों ने ज्ञान के लिए हिब्रू शब्द के ग्रीक अनुवाद सोफिया की पहचान यीशु मसीह के साथ की।

दस्तावेज़ीकरण के बिना उल्लेखित एक उल्लेखनीय अपवाद स्पष्ट रूप से इरेनायस था, जिसने ज्ञान को पवित्र आत्मा के बराबर बताया था। एक बहुत ही दिलचस्प विचार. ज्ञान और मसीह के इस समीकरण का आधार दो महत्वपूर्ण विशेषताओं में दो आंकड़ों के बीच ओवरलैप था।

दोनों को बाइबिल ग्रंथों में पूर्व-अस्तित्व और सृजन में एजेंटों के रूप में वर्णित किया गया था। वाल्टके द्वारा प्रासंगिक के रूप में उल्लिखित ग्रंथ नीतिवचन 3, 19-20, अध्याय 8, श्लोक 22-31, जॉन 1, श्लोक 3, 1 कुरिन्थियों 8, श्लोक 6, कुलुस्सियों 1, श्लोक 15-16, इब्रानियों 1, श्लोक 3 हैं। हालाँकि, वाल्टके ने तर्क दिया कि नीतिवचन 8 की व्याकरणिक-ऐतिहासिक व्याख्या पितृसत्तात्मक व्याख्या का समर्थन नहीं करती है। बल्कि, उन्होंने व्यक्तिगत ज्ञान और नीतिवचन की पुस्तक की सामग्री के बीच समीकरण की अपनी पिछली थीसिस पर विस्तार किया।

मैं वाल्टके से उद्धृत करता हूँ, सोलोमन ने अपनी शिक्षाओं के साथ महिला ज्ञान की पहचान की, न कि हाइपोस्टैसिस के साथ, यानी, एक ठोस स्वर्गीय प्राणी जो ईश्वर का प्रतिनिधित्व करता है या उसके लिए खड़ा है और उससे स्वतंत्र है। इसके अलावा, वाल्टके ने आगे कहा, नीतिवचन 8, 22-31 के प्राचीन संस्करण और यहूदी ज्ञान साहित्य नए नियम के उच्च ईसाई धर्म के लिए कोई सुसंगत, यदि कोई हो, आधार प्रदान नहीं करते हैं। उन्होंने सेप्टुआजेंट, मेनज़िराह, फिलो, विजडम ऑफ सोलोमन और जेरूसलम टार्गम की संक्षिप्त समीक्षा की।

सोलोमन की बुद्धि में सामग्री के संबंध में उनकी टिप्पणी दोहराने लायक है। यह गुमनाम एकेश्वरवादी, क्षमा करें, यह गुमनाम एकेश्वरवादी ऑरिजन के शब्द का उपयोग करने के लिए, एक दिव्य शक्ति के रूप में ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है, जो निर्माता और सृजन के बीच मध्यस्थता करता है, अंत उद्धरण। वाल्टके ने नए नियम के उच्च ईसाई धर्म की भविष्यवाणी से इनकार नहीं किया, लेकिन उन्होंने इस बात से इनकार किया कि इस उच्च ईसाई धर्म को नीतिवचन 8 में व्यक्त ज्ञान के लक्षण वर्णन द्वारा मान्य किया जा सकता है। मैं फिर से उद्धृत करता हूँ, ईसाई युग के अंत में यहूदी लेखन ने प्रदान किया हो सकता है ट्रिनिटी के सिद्धांत को व्यक्त करने के लिए प्रेरितों के पास एक माध्यम है, यीशु मसीह को उस एजेंट के रूप में दर्शाया गया है जिसके माध्यम से सभी चीजें बनाई गईं, लेकिन वे नीतिवचन 8.22-31, अंतिम उद्धरण में अपने उच्च ईसाई धर्म का हवाला नहीं देते हैं या उसका निर्माण नहीं करते हैं।

इस पैराग्राफ को खोलना उचित है, दोनों ही कारणों से कि यह किस बात की पुष्टि करता है और किस बात का खंडन करता है। सबसे पहले, वाल्टके ने पुष्टि की कि नीतिवचन 8.22-31 में व्यक्तिगत ज्ञान पर विस्तार से बताए गए यहूदी लेखन ने प्रभावित किया कि नए नियम के लेखकों ने नासरत के यीशु को कैसे चित्रित किया। दूसरा, वाल्टके इस बात से इनकार करते हैं कि नए नियम के लेखकों ने नीतिवचन 8.22-31 का हवाला दिया है। तीसरा, वाल्टके इस बात से इनकार करते हैं कि नए नियम के लेखक नीतिवचन 8.22-31 से प्रभावित थे जब उन्होंने नाज़ारेथ के यीशु के बारे में अपना उच्च ईसाई धर्म विकसित किया था।

वाल्टके ने कथन एक में जो पुष्टि की है, मैं उससे सहमत हूँ। वाल्टके का पहला खंडन भी उतना ही गैर-विवादास्पद है। नए नियम के लेखकों ने वास्तव में नीतिवचन 8.22-31 को उद्धृत नहीं

किया। हालाँकि, मैं वाल्टके के इस तर्क से असहमत हूँ कि नीतिवचन 8.22-31 ने नाज़रेथ के यीशु के बारे में नए नियम के लेखकों के विचारों को प्रभावित नहीं किया।

अब हम व्याख्यान छह के भाग दो की ओर मुड़ते हैं, जो ज्ञान का अवतार है। और हम नीतिवचन की पुस्तक में व्यक्तिगत ज्ञान के बारे में कुछ पाठों पर पहली नज़र डालने जा रहे हैं। अध्याय एक, छंद 20-33, अध्याय आठ, छंद 1-36, और अध्याय नौ, छंद 1-6 और 11-12 में बुद्धि एक पूर्ण रूप से मानवीकृत महिला आकृति के रूप में प्रकट होती है।

और फिर यह भी, या ज्ञान भी, एक कम विकसित व्यक्तित्व के रूप में प्रकट होता है, या शायद हम इसे एक एनीमेशन कह सकते हैं, अध्याय दो में, श्लोक 1-3, अध्याय तीन में, श्लोक 13-20, अध्याय पांच में, श्लोक 5-9, श्लोक 11 और 13, और अध्याय सात में, श्लोक 4-5। अब मैं अध्याय एक, श्लोक 20-33 में मानवीकरण की एक प्रकार की रूपात्मक रूप से संवेदनशील व्याख्या के साथ शुरुआत करता हूँ। यहाँ, बुद्धि को दृष्टिकोण वाली एक महिला के रूप में व्यक्त किया गया है।

वह सीखने के अपने निमंत्रण का जवाब देने में उनकी विफलता के बारे में सरल लोगों को व्याख्यान देती है। एक निमंत्रण जो स्पष्ट रूप से पहले चरण में हुआ था और अब मान लिया गया है। श्लोक 20-21 उसकी अपील का परिचय देता है।

वह चिल्लाती है, आवाज उठाती है और बोलती है। श्लोक 22-33 में उसकी वास्तविक फटकार शामिल है। यहाँ, ज्ञान न केवल एक तिरस्कृत महिला की तरह बात करता है, बल्कि वह खुद को एक महिला इंसान के रूप में संदर्भित करती है।

उसके पास एक आत्मा है, श्लोक 23, एनआरएसवी में अनुवादित विचार। उसका तिरस्कार किया गया है, हालाँकि उसने अपना हाथ बढ़ाया है, श्लोक 24। वह हँसने के अपने इरादे के बारे में बात करती है, श्लोक 26, और वह उन लोगों को जवाब देने से इनकार करती है जिन्होंने पहले उसका तिरस्कार किया था जब उन्हें उसकी उपेक्षा के परिणाम भुगतने पड़ते हैं, श्लोक 28.

जैसा कि छंद 29-30 प्रदर्शित करता है, मानवीकरण साहित्यिक स्तर पर बना हुआ है। बुद्धि उसकी सलाह और फटकार को ज्ञान और प्रभु के भय के साथ जोड़ती है। इस परिच्छेद में मानवीकरण साहित्यिक स्तर पर बना हुआ है।

यह एक महिला के रूप में ऋषि की बुद्धिमत्ता को दर्शाता है। हालाँकि, मानवीकरण केवल एक अलंकरण नहीं है। बल्कि, इसका एक शक्तिशाली भावनात्मक प्रभाव है क्योंकि यह कुशलतापूर्वक चित्रित करता है कि ज्ञान का अधिग्रहण कितना महत्वपूर्ण और जरूरी है।

फिर भी ऐसा कुछ भी नहीं सुझाता कि ज्ञान केवल मानवीय से भिन्न है, लगभग अति मानवीय। हालाँकि, उसकी चिड़चिड़ाहट चरित्र की कमजोरी का संकेत नहीं देती है, बल्कि ज्ञान को अस्वीकार करने के खतरे के साथ-साथ उसकी भेद्यता को भी उजागर करती है, जो मनुष्यों के सीखने की गहरी इच्छा से पैदा हुई है। यहाँ बुद्धि दिव्य नहीं है, हालाँकि वह अभिव्यक्ति के

माध्यम से, और भगवान के भय के माध्यम से, और अपने भाषण के तरीके के माध्यम से भगवान के साथ जुड़ी हुई है, जो कई पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं से मिलती जुलती है।

तो फिर, इस मानवीकरण का प्रभाव क्या है? माइकल फॉक्स ने अपनी टिप्पणी में एक उपयोगी सारांश दिया है। मैं लेडी विजडम का पहला प्रवचन उद्धृत करता हूँ जो कर्मों के बजाय लोगों के दृष्टिकोण से संबंधित है। यहां फोकस आंतरिक व्यक्ति पर है।

उनके सभी भाषणों में, यह समझाने के बजाय कि कौन से कार्य अच्छे या बुरे हैं, ज्ञान स्वयं ज्ञान, या स्वयं ज्ञान के लिए एक बुनियादी रुख की मांग करता है। ज्ञान के संदेश के प्रति एक प्रेमपूर्ण खुलापन, चाहे वह मधुर हो या कठोर, साथ ही इसे अस्वीकार करने के परिणामों का भय भी। सीखने के लिए यह रवैया आवश्यक है।

यह प्रयासों को प्रेरित करता है और पाठों को आत्मसात करने में सक्षम बनाता है। इसके बिना, सतही शिक्षा भी असंभव है और ज्ञान को क्रियान्वित नहीं किया जा सकता है। अन्य अंतराल सही रुख पर जोर देंगे।

यह हमें गलत से डराना चाहता है। इस उद्धरण का अंतिम वाक्य मानवीय ज्ञान के तिरस्कारपूर्ण शब्दों के पीछे की अलंकारिक मंशा पर प्रकाश डालता है। नीतिवचन की पुस्तक का ज्ञान जीवन के लिए महत्वपूर्ण है।

और जिस कवि ने इस खूबसूरत और जरूरी अपील को लिखा है, वह पाठकों को जुनून के साथ सीखने और खुद को बौद्धिक और धार्मिक उद्यम के लिए समर्पित करने के लिए प्रेरित करने के लिए ज्ञान को सचमुच जीवंत बनाता है। अब हम नीतिवचन 2, श्लोक 1 से 3 की ओर बढ़ते हैं। पूरे अध्याय, अध्याय 2 में एक विस्तारित यदि खंड शामिल है। पर्यायवाची शब्दों की एक श्रृंखला में, वक्ता श्लोक 1 से 2 में अपने शिक्षण को ज्ञान के साथ पहचानता है। मेरे बेटे, यदि तुम मेरे शब्दों और मेरी आज्ञाओं को स्वीकार करते हो, तो अपने कान ज्ञान की ओर लगाओ और अपने हृदय को समझने की ओर झुकाओ।

प्रोथेसिस, यदि स्थिति का परिणाम है, श्लोक 3 में जारी है, जिसमें तब मानवीकरण शामिल है। यदि आप वास्तव में अंतर्दृष्टि के लिए चिल्लाते हैं और समझ के लिए अपनी आवाज उठाते हैं, और फिर श्लोक 4 तक विस्तारित होते हैं, जहां दो उपमाएँ ज्ञान और उसके पर्यायवाची शब्दों, अर्थात् अंतर्दृष्टि और समझ की संक्षिप्त एनीमेशन को दर्शाती हैं, उसकी तुलना चांदी और छिपे हुए खजानों से करती हैं। छंद 2 से 4 में मानवीकरण और पुनर्मूल्यांकन के बीच एक दिलचस्प बातचीत है। मुझे शायद यहां एक पल के लिए रुकना चाहिए और समझाना चाहिए कि मानवीकरण के विपरीत के लिए पुनर्मूल्यांकन एक तकनीकी शब्द है।

मानवीकरण किसी वस्तु या अमूर्त वास्तविकता को एक जीवित प्राणी, एक इंसान बना देता है। एक पुनर्मूल्यांकन एक जीवित प्राणी को, अक्सर एक इंसान को, एक वस्तु में बदल देता है। यह ऑब्जेक्टिफाई करता है।

तो, जैसा कि मैंने कहा, छंद 2 से 4 में मानवीकरण और पुनर्मूल्यांकन के बीच एक दिलचस्प बातचीत है। वाक्यांश यह है कि, अपने कानों को ज्ञान के प्रति चौकस बनाएं और अपने दिल को समझने के लिए झुकाएं, यदि आप वास्तव में अंतर्दृष्टि के लिए रोते हैं और अपना ध्यान बढ़ाते हैं समझने के लिए आवाज, यह छंद 2 से 3 में मानवीकरण है, एक क्रीमती और महत्वपूर्ण व्यक्ति के साथ एक रिश्ता पैदा करता है, एक ऐसा रिश्ता जो दो-तरफ़ा संचार और संपर्क की सक्रिय खोज के माध्यम से पनपता है। वाक्यांश यह है कि, यदि आप इसे चांदी की तरह खोजते हैं और इसे छिपे हुए खजानों की तरह खोजते हैं, तो श्लोक 4 में इसका अर्थ यह है कि वांछित परिणाम, अर्थात् सीखने के लिए बहुत अधिक प्रयास और बलिदान खर्च करना होगा। इसलिए, श्लोक 1 से 2 पिता की शिक्षा को ज्ञान के मूर्त रूप के साथ जोड़ते हैं जो स्वयं ईश्वर से प्राप्त होता है।

श्लोक 6 देखें। यह शिक्षण दृष्टिकोण नीतिवचन 2 में वास्तविक शब्दों से परे फैला हुआ है। विचाराधीन शब्द आगे आने वाले संग्रहों में चेतावनी और कहावतें हैं, क्योंकि इस अध्याय में कोई आदेश नहीं हैं। एपोडोसिस, शर्त पूरी होने का परिणाम, श्लोक 5 में शुरू होता है, जिसमें शुरुआती छंदों में प्रस्तावित कार्रवाई के परिणाम का उल्लेख है। जो लोग ज्ञान की खोज करते हैं वे प्रभु के भय को समझेंगे और ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

दोनों का संयोजन ज्ञान की पराकाष्ठा है। इस वादे पर भरोसा किया जा सकता है, क्योंकि अंततः यह प्रभु ही है जो श्लोक 6 में बुद्धि, ज्ञान और समझ प्रदान करता है। क्योंकि प्रभु बुद्धि देता है। उसके मुँह से ज्ञान और समझ निकलती है।

विस्तारित प्रोटेसिस, तो, एक अलंकारिक उपकरण है, जो फॉक्स के अनुसार, ज्ञान के साधक के सामने कार्य की भयावहता के बारे में कुछ सुझाव देता है। बुद्धि इतनी उन्नत और इतनी दूर है कि उस तक पहुंच प्रत्यक्ष अपील के जवाब में उसके आत्म-प्रकटीकरण पर निर्भर करती है, श्लोक 3, एक रहस्योद्घाटन जो केवल भगवान के माध्यम से संभव है, श्लोक 6 से 7। अंतिम विश्लेषण में, फिर, अपील व्यक्तिगत ज्ञान के लिए स्वयं ईश्वर से अपील है। मानवीकरण का प्रभाव ज्ञान की वांछनीयता की धारणाओं को उस प्रयास पर जोर देने के साथ जोड़ना है जो ज्ञान की तलाश करने वालों से हमेशा मांग की जाती है और एक प्रोत्साहन है कि प्रयास को ईश्वर के दयालु हस्तक्षेप के माध्यम से पुरस्कृत किया जाएगा जिनके द्वारा ज्ञान प्रदान किया जाता है। ज्ञान के आत्म-प्रकटीकरण के साथ समतुल्य।

मानवीकरण की साहित्यिक युक्ति सरलता से ज्ञान के साधक को ईश्वर को ज्ञान के अंतिम प्रदाता के रूप में इंगित करके चुनौती देने, वादा करने और प्रोत्साहित करने का काम करती है। वॉल्टके के अनुसार, ईश्वर का ज्ञान, कम से कम आंशिक रूप से निर्माता के साथ व्यक्तिगत संबंध में प्रवेश करने को संदर्भित करता है, उद्धरण समाप्त। बुद्धि तर्कसंगत है और इसके लिए प्रयास की आवश्यकता होती है।

कैरल न्यूसोम के शब्दों का उपयोग करते हुए, निष्ठा समझ से पहले आती है। अब हम नीतिवचन 3, श्लोक 13 से 20 तक की ओर मुड़ते हैं। यह परिच्छेद एक विस्तारित मैकरिज्म है, एक शैली जिसका उपयोग अपने मालिक के अच्छे भाग्य का बखान करके एक निश्चित गुण को प्रोत्साहित करने के लिए किया जाता है, जैसा कि माइकल फॉक्स कहते हैं।

सुखी तो अमुक है क्योंकि यहाँ बुद्धि के गुण की ही अनुशंसा की गई है। बुद्धि के स्वामी को प्रसन्न कहा जाता है क्योंकि बुद्धि के माध्यम से वह सम्मान और धन प्राप्त करेगा, श्लोक 16। तुलना, श्लोक 14 से 15, बुद्धि के मूल्य बनाम वहां उल्लिखित विभिन्न कीमती धातुओं के मूल्य के बीच नहीं है, बल्कि प्रत्येक के बीच है उत्पन्न करना संभव है।

इस प्रकार, बुद्धि को हाथ और पैर वाली महिला के रूप में दर्शाया गया है। वह अपने दाहिने हाथ से अपने मालिक को लंबी उम्र और बाएं हाथ से धन और सम्मान देती है, श्लोक 16। वह जिस तरह से चलती है, यानी उन लोगों के प्रति व्यवहार करती है जो ज्ञान का उपयोग करते हैं, उन्हें शांति मिलती है, श्लोक 17।

यह कथन कि व्यक्तिगत ज्ञान मूल्यवान वस्तुओं से बेहतर है, फिर से ज्ञान के मूल्य के संबंधपरक पहलू पर जोर देता है। यह अध्याय 3, छंद 14 से 15 पर ब्रूस वाल्टके की टिप्पणी में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है। ज्ञान जो प्रदान कर सकता है वह चांदी से बेहतर है क्योंकि पैसा मेज पर भोजन रख सकता है लेकिन उसके चारों ओर संगति नहीं।

एक घर, लेकिन घर नहीं और एक महिला को आभूषण तो दे सकता है, लेकिन वह प्यार नहीं, जो वह वास्तव में चाहती है। अंत उद्धरण। हालाँकि, मानवीकरण अल्पकालिक है। श्लोक 18 में, बुद्धि को जीवन के वृक्ष के रूप में दर्शाया गया है, और चरम श्लोक 19 से 20 में, बुद्धि ईश्वर से अलग कोई इकाई नहीं है, बल्कि, वह बुद्धि जिसके माध्यम से भगवान ने पृथ्वी की स्थापना की, वह उनके गुणों में से एक है।

ज्ञान और समझ के समानांतर उनके ज्ञान से ही संसार का निर्माण हुआ। वैसे, भजन 104, श्लोक 24 में समान रूप से चरम कथन के समान। इस प्रकार, बुद्धिमान लोग खुद को खुश क्यों मान सकते हैं इसका अंतिम कारण यह है कि ज्ञान के साथ उनके हाथ में वही गुण हैं जो भगवान ने सृजन में उपयोग किए थे।

सफलता की इससे बेहतर गारंटी क्या हो सकती है? फिर, साहित्यिक स्तर पर मानवीकरण बना हुआ है। ज्ञान की छवि उन लोगों की ओर शालीनता से चलती है जिन्होंने उसे खोजा है और पाया है, उन्हें पुरस्कृत करने के लिए धन, सम्मान और लंबी उम्र प्रदान करते हुए एक मजबूत भावनात्मक अपील है। फिर भी, ज्ञान न तो अपने आप में एक स्वतंत्र इकाई है और न ही ईश्वर से स्वतंत्र कोई मानवीय गुण है।

यहां बुद्धि ईश्वर के मुख्य चरित्र लक्षणों में से एक है और बुद्धि की तलाश में, मनुष्य ईश्वर की बुद्धि की तलाश करते हैं। ब्रूस वाल्टके ने ठीक ही लिखा है कि छंद 19 से 20 यह मानते हैं कि मानवीकृत ज्ञान सृजन से पहले होता है, एक बिंदु जिस पर हम तब लौटेंगे जब हम पाठ 7 में नीतिवचन 8 को देखेंगे। यहाँ, फिर, हमारे पास ज्ञान का एक संक्षिप्त साहित्यिक मानवीकरण है जहाँ वह एक है पूर्व विद्यमान दैवीय गुण. नीतिवचन 3 में इस बिंदु पर जोर नहीं दिया गया है, लेकिन हम इस बिंदु पर बाद में लौटेंगे जब हम नीतिवचन 8 में ज्ञान के पूर्व-अस्तित्व के महत्व को देखेंगे। अब मैं नीतिवचन 4, श्लोक 5 से 9, और श्लोक 11 और 13 की ओर मुड़ता हूँ।

नीतिवचन 2, 1 से 3 के समान, कविता 5 में पिता की शिक्षा के साथ बुद्धि की पहचान की जाती है क्योंकि बुद्धि और अंतर्दृष्टि पिता के शब्दों के समानांतर हैं। छंद 6 से 9 में, बुद्धि को एक ऐसी महिला के रूप में दर्शाया गया है जो प्राप्त करने वाले पर माला और मुकुट रखती है, छंद 5 और 7, प्यार करती है, छंद 6 और 8, गले लगाती है, छंद 8, और उसे रखती है, छंद 6। 11 और 13 भी मानवीकरण का हिस्सा हैं क्योंकि श्लोक 13 में स्त्रीवाचक सर्वनाम प्रत्यय श्लोक 11 में ज्ञान शब्द को संदर्भित करता है। कल्पना एक पुरुष और एक महिला के बीच के रिश्ते की बात करती है, लेकिन यह एक पति और उसके पति के लिए विशिष्ट नहीं है। पत्नी को पारंपरिक रूप से इज़राइल में माना जाता है।

फॉक्स ने लिखा, प्राचीन दृष्टिकोण की आधुनिक रूढ़िवादिता के विपरीत, यह रूपक महिला है जो रक्षक है, जो अपने शिष्य की रक्षा करती है और उसकी रक्षा करती है। व्यक्तिगत ज्ञान प्रमुख भूमिका निभाता है, लेकिन यह इस बात का संकेत नहीं है कि प्राचीन दृष्टिकोण पारंपरिक रूप से महिलाओं को पुरुषों के बराबर मानते थे या नियमित आधार पर महिलाओं को अपने पति की संरक्षिका के रूप में मानते थे, जैसा कि फॉक्स सोचता है। बल्कि, रिश्ते में व्यक्तिगत ज्ञान की भूमिका उसकी योग्यता को इंगित करने के लिए एक जानबूझकर भूमिका में बदलाव का गठन करती है और इस प्रकार उसके प्रति युवक की प्रशंसा को जगाती है।

लेडी विजडम का प्रभुत्व एक माँ के रूप का सुझाव दे सकता है, खासकर यदि अवतार केवल श्लोक 6 से शुरू होता है। फिर भी, यह तथ्य कि बेटे को उसे प्राप्त करना है, एक रूपक कथन है जो सुझाव देता है कि उसे उसके साथ पति-पत्नी के रिश्ते को बढ़ावा देना चाहिए, जैसा कि निम्नलिखित विचार प्रदर्शित करेंगे। अब मैं इस परिच्छेद में एक नए रूपक के बारे में बात करने जा रहा हूँ, जिसे बहुत अच्छी तरह से नहीं समझा गया है। इस पर कई अलग-अलग राय और तर्क हैं, लेकिन मैं आधुनिक रूपक सिद्धांत की मदद से अपने विश्लेषण के आधार पर क्रिया की एक नई व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास करूंगा।

प्रारंभ में, कविता 5 में अर्जित करने की क्रिया के माध्यम से संकेतित ज्ञान का अधिग्रहण एक व्यक्ति के रूप में उसकी पहचान का पक्ष नहीं लेता है, क्योंकि आम तौर पर यह व्यक्तियों के बजाय वस्तुएं हैं जो बिक्री के लिए हैं। फिर भी कई कारण अन्यथा सुझाते हैं। सबसे पहले, प्राचीन निकट पूर्व के अधिकांश हिस्सों में, महिलाओं को उनके पिता या उनके पतियों की संपत्ति के रूप में देखा जाता था।

उदाहरण के लिए, निर्गमन 21.7, 22.16-17 देखें। दूसरा, प्राप्त करने की क्रिया का उपयोग नीतिवचन 8.22 में भी किया गया है, जहां व्यक्तिगत ज्ञान स्वयं बताता है कि भगवान ने उसे अपने रास्ते की शुरुआत में ही हासिल कर लिया है। तीसरा, प्राप्त करने की क्रिया नीतिवचन 4.7 में भी दिखाई देती है, जहाँ ज्ञान निश्चित रूप से व्यक्त किया गया है। यह परिस्थिति नीतिवचन 4.7 के साथ-साथ नीतिवचन 8.22 में पुनः, शुरुआत या सार, या सबसे महत्वपूर्ण भाग शब्द की उपस्थिति के साथ मेल खाती है, जो नीतिवचन 4.5-9 और नीतिवचन 8.22 के बीच घनिष्ठ संबंध को और मजबूत करती है। चौथा, हिब्रू बाइबिल में प्राप्त करने की क्रिया का उपयोग दुल्हन की कीमत चुकाने के माध्यम से पति-पत्नी के रिश्ते की शुरुआत को दर्शाता है।

अक्सर, क्रिया का अर्थ विभिन्न वस्तुओं को खरीदना होता है। हालाँकि, कभी-कभी इसका उपयोग मनुष्यों के साथ प्रत्यक्ष वस्तु के रूप में किया जाता है। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 4.1 में, ईव ने घोषणा की कि उसे एक पुत्र प्राप्त हुआ है।

एक अन्य उदाहरण लैव्यव्यवस्था 25 श्लोक 44-45 जैसे अनुच्छेदों में प्रमाणित है, जहां पुरुष और महिला दास खरीदे जाते हैं। महिला दासियों के इस तरह के अधिग्रहण से कभी-कभी उन्हें खरीदार की उपपत्नी या पत्नी बन जाना पड़ता था। लेकिन पुरुष और महिला दास दोनों के लिए क्रिया का अंधाधुंध उपयोग इंगित करता है कि खरीद का पहलू उल्लेखनीय है।

हमारी चर्चा के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक बोअज़ द्वारा रूथ 4 में रूथ की खरीद है। रूथ 4.10 में, बोअज़ ने घोषणा की है कि मैंने महलोन की पत्नी रूथ मोआबी को भी अपनी पत्नी के रूप में प्राप्त कर लिया है। यहां, एक पुरुष द्वारा एक महिला के अधिग्रहण को समझाया गया है और स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यह पति-पत्नी के रिश्ते की ओर ले जाता है, और वक्ता के लिए विवाह का पहलू स्पष्ट रूप से अग्रभूमि में है। बहरहाल, जैसा कि व्यापक संदर्भ स्पष्ट करता है, यहां भी कीमत के लिए खरीद का पहलू निहित और स्पष्ट रूप से बताया गया है।

इससे पहले लेन-देन में, बोअज़ ने अपने रिश्तेदार से कहा था कि मुझे लगता है कि आप नाओमी के हाथ से मोआबी रूथ, जो मृत व्यक्ति की विधवा है, को भी प्राप्त कर रहे हैं, ताकि उसकी विरासत पर मृत व्यक्ति का नाम बरकरार रखा जा सके। रूथ 4.5. महिला रूथ का अधिग्रहण लेवेरेट कानून के अनुरूप भूमि की बिक्री से जुड़े सौदे का हिस्सा है। अधिग्रहण करने की क्रिया का उपयोग वस्तु और एक महिला के लिए अंधाधुंध रूप से किया जाता है, भले ही महिला के अधिग्रहण में स्पष्ट रूप से शामिल है कि खरीदार उससे शादी करेगा।

यही शर्त बोअज़ की अपनी खरीद घोषणा में भी देखी जा सकती है। आज तुम गवाह हो, उस ने साम्हने कहा, कि जो कुछ एलीमेलेक का, और जो कुछ किल्योन और महलोन का या, वह सब मैं ने नाओमी के हाथ से ले लिया है। यहां उन सभी के संदर्भ में जो तीन मृत व्यक्तियों से संबंधित थे, उनमें रूथ भी शामिल थी, जो अपनी पत्नी के रूप में एलीमेलेक के बेटे के कब्जे में थी।

तो, फिर हिब्रू बाइबिल में प्राप्त करने की क्रिया का उपयोग कैसे किया गया, इसका यह संक्षिप्त सर्वेक्षण दिखाता है कि क्रिया पति-पत्नी के रिश्ते की शुरुआत के लिए लाक्षणिक रूप से संदर्भित हो सकती है और नियमित रूप से होती भी है। लेकिन इससे यह भी पता चलता है कि संबंध स्थापित करने के लिए कीमत चुकाने का पहलू आम तौर पर मौजूद होता है। हम क्रिया के इस दोहरे पहलू पर बाद में लौटेंगे जब हम नीतिवचन 8, श्लोक 22 में इसके सटीक अर्थ पर विचार करेंगे।

अभी के लिए, यह इंगित करना पर्याप्त है कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए पिता की सिफारिश एक रूपक कथन है जिसमें उनसे अपनी दुल्हन के लिए ज्ञान प्राप्त करने के लिए आवश्यक वधू मूल्य का भुगतान करने का आग्रह किया गया है। कहावत 4, श्लोक 5 में कहा गया है कि बुद्धि प्राप्त करो, अंतर्दृष्टि प्राप्त करो, मेरे मुंह के शब्दों को मत भूलो और न ही उनसे मुंह मोड़ो, इसलिए यह परिकल्पना की गई है कि बेटे को अपनी दुल्हन के लिए बुद्धि हासिल करनी चाहिए। हालाँकि,

विजडम कोई वास्तविक महिला नहीं है, इसलिए दुल्हन की कीमत को शाब्दिक अर्थ में नहीं लिया जाना चाहिए।

बल्कि, निहित भुगतान यह कहने का एक रूपक तरीका है कि बेटे को अपना सब कुछ देने की जरूरत है, जैसा कि श्लोक 7 स्पष्ट करता है। ज्ञान की शुरुआत सभी अधिग्रहणों के बदले में ज्ञान प्राप्त करना है, अधिग्रहण के रूपक उपयोग के अनुरूप अंतर्दृष्टि प्राप्त करना है। यह कथन अतिशयोक्तिपूर्ण है और इसका शाब्दिक अर्थ नहीं लिया जाना चाहिए।

बेटे को पिता के शब्दों को याद रखने और उनका पालन करने के सचेत प्रयास के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने के लिए अधिकतम प्रयास करने की आवश्यकता है। यही विचार नीतिवचन की पुस्तक के कई अन्य अंशों में भी व्यक्त किया गया है जहाँ बुद्धिमान बनने की प्रक्रिया को व्यक्त करने के लिए प्राप्त करने की क्रिया का उपयोग किया जाता है। इसलिए, उदाहरण के लिए, नीतिवचन 23, श्लोक 23 में, यह कहा गया है कि सत्य प्राप्त करो और उसे मत बेचो।

बुद्धि, शिक्षा और समझ प्राप्त करो। और यहां क्रिया खरीदने के लिए विशेष अर्थ रखती है, जैसा कि बेचने के साथ इसके विपरीत से पता चलता है। फिर भी, यहाँ क्रिया पूरी तरह से रूपक है क्योंकि बिक्री के लिए वस्तुएँ अमूर्त इकाइयाँ हैं जिन्हें शाब्दिक अर्थ में नहीं खरीदा जा सकता है।

निहितार्थ यह है कि गंभीर प्रयास की आवश्यकता है और इस प्रकार का प्रयास नीतिवचन अध्याय 15, श्लोक 32 में अच्छी तरह से व्यक्त किया गया है। उद्धरण, जो लोग चेतावनी पर ध्यान देते हैं वे समझ प्राप्त करते हैं। ज्ञान प्राप्ति के लिए ध्यान देने की आवश्यकता है।

अंग्रेजी मुहावरे में भी आर्थिक लेनदेन के समान उपयोग पर ध्यान दें। और इसके लिए आज्ञाकारिता की आवश्यकता है। इसके अलावा, नीतिवचन अध्याय 17, श्लोक 16, और नीतिवचन 18, श्लोक 15 में, यहां वे बुद्धि प्राप्त करने के लिए बुद्धि को एक शर्त के रूप में दावा करते हैं।

इस प्रकार, प्राचीन और हाल के रीति-रिवाज और हिब्रू बाइबिल में प्राप्त करने की क्रिया का उपयोग दोनों इस विचार का समर्थन करते हैं कि श्लोक 5 के बाद से ज्ञान को व्यक्त किया गया है और इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि यहां परिकल्पित संबंध मां और बेटे के बीच नहीं बल्कि पति के बीच है। और पत्नी, स्त्री के साथ प्रमुख भागीदार के रूप में। वाल्टके ने प्रस्तावित किया कि नीतिवचन 4, 5 से 9, मैं उद्धृत करता हूँ, संभवतः महिला ज्ञान को एक दुल्हन के रूप में प्राप्त करने और प्यार करने की सलाह देता है और एक संरक्षक के रूप में प्रस्तुत करता है जो अपने प्रेमी को प्रेरणाओं में पुरस्कृत करता है, अंत उद्धरण। यह पाठ के अधिकांश अर्थों को पकड़ लेता है, लेकिन ज्ञान के चित्रण को अच्छी तरह से चेतावनियों की दुल्हन और प्रेरणाओं की संरक्षिका में विभाजित नहीं किया जा सकता है, जैसा कि वाल्टके ने प्रयास किया था।

बल्कि, यह पाठ ज्ञान को एक शक्तिशाली संरक्षक के रूप में प्रस्तुत करता है जिसका पुत्र दरबार लगाता है। परिकल्पित संबंध जटिल है। यहां व्यक्तिगत ज्ञान उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा और पर्याप्त वित्तीय साधनों वाली एक शक्तिशाली और प्रभावशाली महिला है।

उसे अपनी दुल्हन बनाने के लिए, बेटे को प्रेमालाप के दौरान और उसके बाद भी खुद को उसके योग्य दिखाना होगा। और, विरोधाभासी रूप से, यदि वह उसे हासिल कर लेता है, तो वह उसकी संपत्ति नहीं होगी। वह उसका होगा।

रिश्ते में, यह वह नहीं है जो उसकी रक्षा करता है। वह ही उसकी रक्षा करती है। ज्ञान के छात्र और उसके अध्ययन के विषय के बीच संबंध को एक सफल और खुशहाल विवाह के रूप में चित्रित किया गया है जिसमें पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ उलट जाती हैं।

व्याख्यान में, ज्ञान का चित्र एक ज्वलंत साहित्यिक व्यक्तित्व के स्तर पर संचालित होता है। वह पिता की शिक्षा को एक शक्तिशाली संरक्षिका, एक आधिकारिक लेकिन उदार और आकर्षक महिला के रूप में चित्रित करती है जो युवक के स्नेह, अर्थात् उसकी आज्ञाकारिता को दर्शाती है, और अपने शिष्य पति की वफादारी को पुरस्कृत करती है। साहित्यिक रणनीति युवा व्यक्ति की स्नेह, प्रशंसा, सम्मान, विश्वास और आदर जैसी भावनाओं को आकर्षित करना है।

बुद्धि को एक उत्कृष्ट जोड़ी के रूप में चित्रित किया गया है और बेटे को दिखाया गया है कि अगर वह उसे अपनी दुल्हन के लिए जीत लेता है तो वह खुद को भाग्यशाली मान सकता है। तो फिर मुझे यहाँ ज्ञान के मानवीकरण के रूपक का इतना विस्तृत विश्लेषण क्यों करना पड़ा? मुझे लगता है कि व्याख्यान के इस भाग में मैं जो दिखाना चाहता था वह यह है कि तब और अब ज्ञान का अधिग्रहण शायद रोमांटिक खोज के विचारों में सर्वोत्तम रूप से व्यक्त होता है। सच्चे ज्ञान की खोज में रोमांस, इच्छा, लगभग यौन प्रकृति के बारे में कुछ शामिल है।

ऐसा उद्यम अत्यधिक मांग वाला होता है। यह जटिल है। यह बेहद समृद्ध है।

लेकिन यह सिर्फ ज्ञान अर्जित करने के बारे में नहीं है। बुद्धि उससे भी कहीं अधिक है। अब हम व्याख्यान के इस भाग को समाप्त करेंगे, और हम नीतिवचन की पुस्तक में ज्ञान के अन्य अवतारों के साथ अगले व्याख्यान को जारी रखेंगे।